International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 01-05-2020; Accepted: 16-05-2020; Published: 03-06-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 3; 2020; Page No. 50-56

ब्रज संस्कृति में पूजनीय लोक देवता

Manorama Devi
Post-Doctoral Fellowship, PGDAV College, Delhi University, Delhi, India

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों से भिन्न अन्यतम संस्कृति है, और भारतीय संस्कृतियों में ब्रज लोक–संस्कृति की अलग पहचान है इसीलिए ब्रज लोक संस्कृति संसार की श्रेष्ठत्म संस्कृति कहलाती है। वैदिक युग से वर्तमान युग तक ब्रज लोक संस्कृति ने मानव को शाश्वत जीवन मूल्य और अति उत्तम संस्कार दिये हैं। ब्रज क्षेत्र की सांस्कृतिक सीमा का निर्धारण करना असंभव है। श्री कृष्ण आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पहले के माने जाते हैं। इतने लम्बे समय के अंतराल में मथुरा मण्डल ने न जाने, कितने उतार–चढ़ाव देखे। इसलिए ब्रज प्रदेश की सीमा को निर्धारित करना असंभव है। ब्रज क्षेत्र का असाधारण महत्व लीला पुरूषोतम श्री कृष्ण की जन्म–भूमि और क्रीडा–स्थली के कारण है। ब्रज में जितने भी स्थान है वे प्रायः सभी श्री कृष्ण की लीला–स्थली हैं। ब्रज संस्कृति के लोक–जीवन के विकास का केन्द्र बिन्दु श्री कृष्ण है। उनके लोकरंजक रूप ने भारतीय जनता के मानस–पटल पर जो छाप छोड़ी है, वह आज भी अमिट है। इसीलिए ब्रजवासी जहाँ–जहाँ रहते हैं वहीं उनकी ब्रज संस्कृति है। इसके तत्पश्चात ब्रज क्षेत्र के सांस्कृतिक वैभव का चित्रण किया है, जिसमें ब्रज की यात्रा, ब्रज की पहाड़िया, प्राचीन मंदिर, ब्रज के वन, उपवन, ताल–तलैयाँ, प्रसिद्ध तीर्थ, ब्रज के लोकदेवता, ब्रज के लोकमेला, ब्रज के लोकपर्व, त्यौहार/लोकोत्सव, ब्रज का लोकजीवन, ब्रज लोकसंस्कृति, ब्रज लोकविश्वास और लोकप्रतीक.....आदि ब्रज क्षेत्र के सांस्कृतिक वैभवों का विस्तृत विवेचन दिया है।

किसी भी देश की लोक संस्कृति को समझना हो तो सर्वप्रथम उस प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्यों को समझना और जानना होगा क्योंकि लोक संस्कृति किसी भी देश, समाज और समुदाय की सम्पन्नता की सूचक होती है। ग्रामीण जीवन के रीति–रिवाज, रहन–सहन, आचार–विचार, धार्मिक आस्था, विश्वास, उत्सव, लोक पर्व, मेला, लोक कलाएँ, लोक गीत, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक गाथाओं और व्यापार सभी कुछ श्री सम्पदा की ओर आकर्षित करते है। लोक जीवन का पहनावा, उड़ावा, शोक–श्रृंगार, आहार–विहार, भजन–कीर्तन सभी लोक संस्कृति के सशक्त आधार है। लोककर्मः– जन्म से लेकर मरण तक के लोक संस्कार लोक जीवन के प्रत्येक क्षण में उपस्थित रहते है। यही लोक जीवन के विभिन्न तत्व हमारे ब्रज प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्य बन जाते हैं। विश्व में उत्तम संस्कृतियों में ब्रज प्रदेश की संस्कृति का नाम आता है। ब्रज संस्कृति से अभिप्रेत भारत वर्ष का ह्रदय है। भारत में ब्रज जनपद की संस्कृति महत्वपूर्ण तथा महिमामयी है। इसी कारण ब्रज का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना गया है। ब्रज लोक–जीवन के कण–कण में राधा–कृष्ण समाये हुए है। ब्रजवासी राधा–कृष्ण की उपासना के साथ–साथ लोक देवी–देवताओं को भी मानते हैं। वर्तमान समय में भी लोक देवी–देवताओं की पूजा की जाती है। ब्रज लोक जीवन में अनेक देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना होती है। लोक देवता जैसे– नागदेवता, कुआ वारौ देवता, बूढ़ौ बाबू, जाहरपीर, सय्यैद, भैरों, लांगुरिया ..... आदि। लोकदेवी, मनसा–देवी, शीतलामाता, गणगौर, सांझी, चामुण्डा, चर्चिका, कात्यायनी, महाविद्या, कंकाली, नरी–सैंमरी, सती–मैया, सांचौली, करौली की केलादेवी, पथवारी .. .. आदि। इन देवी–देवताओं के अलावा ब्रजवासी सूर्य, चन्द्र, तारे, नदी, कुआ, ताल–तलैया, वृक्ष आदि की भी पूजा करते हैं।

गिरीश कुमार चतुर्वेदी के अनुसार ब्रज लोक संस्कृति में नाग–पंचमी का विशेष महत्व है। यह त्यौहार सावन मास की शुक्ल पंचमी को मनाया जाता है। ब्रज के प्राचीन लोक–देवताओं में यक्षों और नागों का प्रमुख स्थान रहा है। गाँव के बुजुर्ग लोग बताते है, कि मथुरा में एक प्रसिद्ध नागटीला था, जहाँ पर बहुत प्रकार सर्प रहते थे। परन्तु अब यहाँ पर आकाशवाणी केन्द्र बन चुका है। नाग पंचमी के दिन महिलाऐं घरों की दीवारों को लीप–पोतकर उस पर काले रंग से नाग की आकृति बनाकर दूध से पूजा करती हैं। कहीं–कहीं दूध में आटे की मोटी सेवईं भी डालकर राँधतीं हैं, फिर उन्हीं से पूजा करतीं हैं। नाग देवता की कहानी कहती हैं, जिसमें नागों की आलौकिक शक्ति का वर्णन किया जाता है। कहीं–कहीं नाग–स्थानों पर नाग–पूजा करके वॉबियों पर दूध चढ़ाती हैं, फूल–रोरी–चावल चढ़ाकर मनौती माँगती है। महिलायें समूह में नाग संबंधी लोक गीत भी गाती है। मथुरा में नाग–स्थान के रूप में 'सप्त समुद्री कूप' और 'नागटीला' प्रसिद्ध स्थान है।[1]

ब्रज में सावन मास के प्रत्येक सोमवार को शिव की पूजा प्रचलित लोक पूजा है। इस दिन शिव पर वेलपत्री धतूरा पुष्प और दूध चढ़ाते है। अधिकतर सभी महिलाऐं व्रत रखती हैं। हरिद्वार से कॉवर लाते है, कोई पैदल, कोई वाहन से, सोमवार के दिन बड़ी घूम–घाम से गा–बजाकर काँवर शिव पर चढ़ाते है। सावन के प्रत्येक सोमवार को काँवर चढ़ा सकते है। त्रयौदशी को काँवर चढ़ाना अधिक शुभ माना जाता है। काँवर चढ़ाते समय ब्रज वनिताएँ शिव के भजन गातीं हैं।

ब्रज में रास रचौ भारी।
स्याम के दरस कराय देयो प्यारी।।

हठ मत पकड़ो भोले भंडारी
वहाँ नहीं नर जाये, वहाँ जाए नारी
कैसे देखोगे रास स्याम कौ,
रास रचौ भारी
ब्रज में रास रचौ भारी।

देख री गौरा मौकूँ ऐसो बनाय ले,
मौकूँ कोई जान ना पावे
काजल बिंदी मेंहदी महावर
लंहगा पेहराय, घूम घूमारौ
ब्रज में रास रचौ भारी।

सिर पै ओढ़ी चुनरिया भोले ने
लंहगा पहनौ घूम–घूमरौ।
रास रचौ भारी
ब्रज में रास रचौ भारी
आगे–आगे गोरा पीछे–पीछे भंडारी
जान गये घट–घट के वासी
आ गये ब्रज में भोले–भंडारी
ब्रज में रास रचौ भारी।
रास रचौ भारी
ऐसी वंशी स्याम ने बजाई
मस्त है गये भोले–भंडारी
नाचत–नाचत भोले–भंडारी
सर से उड़ गई चुनरी सारी
रास रचौ भारी
ब्रज में रास रचौ भारी

''हर महीने की चर्तुदर्शी को शिवरात्रि मनाई जाती है, शिव पुराण के मुताबिक फागुन मास की कृष्ण पक्ष की चर्तुदर्शी को जो शिवरात्रि आती है उसे महाशिवरात्रि कहते हैं।''[2]
मथुरा निवासी कल्पना पाठक कहतीं हैं कि ''ब्रज में तीन बड़ी रात्रि मानी जाती हैं। 1 काल रात्रि, 2 महा रात्रि और 3 शिवरात्रि। ब्रज में तीनों रात्रियों को बड़ी घूमधाम से मनाया जाता है। काल रात्रि भादों मास की कृष्ण अष्ठमी को कृष्णाष्ठमी के रूप में मनाई जाती है। इस दिन ब्रज के नायक श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। महारात्रि कार्तिक मास की अमावस्या को दीवापली के त्यौहार के रूप में सभी मनाते हैं। इस दिन भगवान राम चौदह वर्ष वन में रहकर घर वापिस आये थे। शिवरात्रि फागुन मास की कृष्ण–त्रयौदशी के दिन शिवरात्रि के रूप में मनाई जाती है। इस दिन शिव–पार्वती का विवाह हुआ था। शिव का व्याउला गाया जाता है।''[3]
शिवरात्रि के दिन नव विवाहिता कोरे मिट्टी के कलशों में जल भरकर सिर पर रखकर समूह के साथ गाती बजाती हुई जाती है। शिव पर जल चढ़ाती है। बेर, धतूरा, फल–फूल भी अर्पण करती है। शिव–पार्वती के विवाह के गीत गाये जाते हैं। जोगी लोग सारंगी और डमरू बजाकर 'शिव का व्याहलौ' गाते हैं। अमावस्या से एक दिन पहले 'बम–भौला' के पूजन में शिव के खप्पर की पूजा की जाती है। जोगियों को भोजन कराया जाता है। भोजन में कढ़ी–चावल, रोटी–भात बनाया जाता है। ब्रज में शिवरात्रि/शिवतेरस और शिव चौदस बड़े उल्लास के साथ मनाते हैं।
ब्रज लोक जीवन में हनुमान जी की भी उपासना की जाती है। हनुमान पर चौला चढ़ाते है और चूरमा का भोग लगाते हैं। हर मंगलवार की शाम को भोग लगाकर प्रसाद भी बाँटते हैं।
हनुमान जयन्ती के दिन हनुमान जी पर चौला चढ़ाकर पूजा अर्चना करके चूरमा और बाटी का प्रसाद भी बाँटा जाता है। (भंडारा भी होता है) और हनुमान के भजन गाए जाते हैं। उदाहरण–

वो तो लाल लंगाटे वाला है
वो तो अंजली का लाला है

मंगल भवन अमंगल हारी
द्रवहु सु दसरथ अजर विहारी
वो तो मंगल करने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

रघुकुल रीति सदा चली आई
प्राण जाई पर बचन न जाई
वो तो बचन निभाने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

संकट से हनुमान छुड़ावे
मन–कर्म–बचन ध्यान जौ लावे
वो तो संकट हरने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

भूत पिशाच निकट नहीं आवे
महावीर जब नाम सुनावे
वो तो भूत भगाने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

विद्यावान गुणी अति चातुर
राम काज करवे को आतुर
वो तो कारज संवारने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

सब सुख लेई तुम्हरी सरना
तुम रक्षक काहू कौ डरना
वो तो डर को भगाने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

गहरी नदिया नाव पुरानी
पार करो मेरे अन्तर्यामी
वो तो पार लगाने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

संकट कटे मिटै सब पीरा
जो सुमरै हनुमत बलवीरा
वो तो संकट काटने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

दीन दयाल विरद संभारी
हरहु नाथ अब संकट भारी
वो तो विपदा मिटाने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

नासै रोग हरै सब पीरा
जपत निरन्तर हनुमंत बीरा
वो तो रोग भगाने वाला है।
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

जै जै जै हनुमान गोसाई
कृपा करौ गुरूदेव की नाई

वो तो कृपा करने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....
संतन के तुम काज संवारौ
विपदा हरौ हनुमान पधारौ
वो तो सत्य का रखवाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

ब्रजवासी कुछ अन्य लोक देवताओं की भी पूजा करते हैं जैसे– कुँआ वारौ देवता, बूढ़ौ बाबू, जहारपीर, सय्यैद, भैरो, लागुँरा..... आदि।

''कुल देवता या कुल देवी पुरे कुल के देवता होते हैं, ना कि व्यक्तिगत देवता (इष्ट देवता) या ग्राम देवता।''[4]

गाँव में प्रायः पत्थर की गोल (सुंदर सी बटिया) पर या पत्थर पर सिंदूर, तेल का चोला चढ़ाकर पीपल की जड़ में रखकर लोक देवता या ग्राम देवता की पूजा भी करते हैं। अधिकतर लोक देवता दो ईंट लंबी–तिरछी खड़ी करके तिखुण्ठी झोपड़ी नुमा बनाकर उसकी पूजा करते हैं। इन लोक देवता को ग्रामवासी अपने खेत या घैर/(अपनी ही जगह में) रखते हैं। लोग एक साल बाद दीपावली पर अपने लोक देवताओं/(कुलदेवताओं) को निहलाकर दीयाबाती करते हैं और भोग लगाते हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि पूरे साल कोई भी इन ईंटों को न तो छूता है न तो तौड़ता है और ना फैंकता है, लोक मानस को यह डर रहता है कि किसी के कुल देवताओं को तोड़–फोड़ दिया, तो वह विचर जाएगें, और हमारा सबकुछ विनाश कर देगें। आजकल लोग गाँव छोड़कर शहर आ गए हैं लेकिन दीपावली पर अपने कुल देवता को निहलाने और भोग लगाने अवश्य जाते हैं। लड़कियाँ कुल देवताओं की पूजा नहीं करतीं। कुल देवता की पूजा कुल बेटा–कुल वधू ही करते हैं।

बलदाऊ जी किसानों के अति प्रिय देवता हैं। उन्हें हलधर कहते हैं। किसान अपनी फसल काटकर कृष्ण के बड़े भाई हलधर बलदाऊ पर चढ़ाते है। दाऊजी के मंदिर पर मेला लगता है। दूर–दूर से स्त्री–पुरूष इस मंदिर पर मनौती मागने आते हैं।

सांझी ब्रज की एक लोक–देवी है। ऐसा माना जाता है गौरा–पार्वती का ही एक लोक प्रचलित रूप सांझी है। क्वारमास की शुक्ल प्रतिपदा से आठ दिन तक यह उत्सव मनाया जाता है। सांझी ब्रज की एक लोक–देवी है। सांझी की पूजा संध्या समय की जाती है। सांझी गौरी–पार्वती का एक लोक–प्रचलित रूप है। सांझी का लोकोत्सव ब्रज बालिकाओं का प्रमुख खेल है। ब्रज बालिकायें घर की दीवारों पर गोबर, फूल, चमकीली पत्तियों से सांझी बनाती है। नौ दिनों तक नित नये रूप में सांझी को परिवर्तित करके सजातीं हैं। रोज शाम को आरती करती हैं। प्रसाद बाँटते हैं। लड़कियाँ सामूहिक रूप से गीत गाती है। ब्रज के गाँवों में कहीं–कहीं घर की दीवारों पर छोटा मन्दिर बनाती हैं उन पर लोक–चित्रकारी करती हैं। मिट्टी की 'गौरा' बनाकर उसमें पधारती हैं संध्या समय पूजन करती हैं। सामूहिक रूप से भजन गाती है। इसे न्यौरता कहा जाता है।

गौरी री गौरी खोल किवरिया, बाहर ठाड़ी तेरी पूजनहारी।
गौरी पूजंतर बेटी, कहा फल मांगे।
मातु पिता कूं राज जु मांगे। भैयन की जौड़ी मांगे।
भाभी की गोद भतीजों मांगे।

ब्रज में चैत्र मास के प्रथम पखवाड़े में गणगौर की पूजा की जाती है। गणगौर का त्यौहार क्वारी कन्याओं का और नवविवाहिता के पूजन का त्यौहार है। क्वारी कन्याऐं अच्छे वर की कामना करती है। नवविवाहिता अखण्ड सौभाग्यवती होने की। इस दिन गौरी की पूजा अर्चना की जाती है। ब्रज में शीतलामाता की मान्यता भी बहुत है। चैत्र मास में होली जल जाने के बाद 'बासौड़ा' मनाया जाता है। इस दिन बासा खाना खाया जाता है। इस दिन शीतलामाता की पूजा की जाती है। आगरा में शीतला देवी का मेला आषाढ़ महीने के चारों सोमवार को लगता है। अधिकांश महिलाऐं आगरा जाकर शीतला के पुत्र 'कुआ वारौ देवता' और शीतला माता की भी पूजा करतीं हैं। इस पूजन के पीछे ब्रज में लोक विश्वास है कि शीतला माता चेचक के रोग से बचायेगी।

नवरात्रियों में ब्रजवासी नौ दिन दुर्गा पूजा करते हैं। हजारों की संख्या में लोक–गीत गाते हुए दुर्गा–दर्शन को जाते है। चैत्र शुक्ल पक्ष के आरम्भ होते ही नवरात्रि में सैकड़ों लोग स्त्री–पुरूष, बच्चे देवी जात को जाते हैं। सभी पीले रंग के कपड़े पहनते हैं। मोर पंखें को एक डन्डे में बाँधकर पुरूष लेकर चलते हैं। स्त्रियाँ बाल खुले रखती हैं। ब्रज में सेंमरी, संचौली, करौली की केलादेवी और नगर कोट की ज्वाला जी तथा चामुण्डा माता अति प्रसिद्ध है। श्रद्धालु भक्त दंडौती परिक्रमा भी करते हैं। दंडौती परिक्रमा (बैठकर और फिर लेटकर दी जाती है) जात से आने के बाद रात्रि जागरण करते हैं। देवी की भेंट और लागुरिया गाते हैं। ये सब लोक भजन होते है। आजकल फिल्मी तर्ज पर भी गीत गाने लगे है। लागुरिया देवी का लाड़ला बेटा माना गया है। ब्रज में लोक धुनों पर लांगुरिया गा–गाकर नाचने का प्रचलन भी है।

मथुरा जिले में छटीकरा स्टेशन के पास 'नरी सेंमरी' नाम का देवी का एक छोटा सा मंदिर है। नवरात्रि में यहाँ मेला लगता है। भक्त श्रृद्धालुओं का अपार जनसमूह दर्शन के लिए आता है। इस मंदिर में 'नरी–सेंमरी' नामक देवी की प्रतिमायें है। मथुरा जिले के कोसी परगना में सांचौली देवी का मंदिर है। ग्रामीण लोग यहाँ पूरे वर्ष दर्शन के लिए आते है। नवरात्रि में विशेष रूप से मेला लगता है। केला देवी का मंदिर राजस्थान के सवाई माधौपुर जिले के अंतर्गत करौली के पास में कालीसिल नाम की नदी बहती है। उसके पास मंदिर है। चारों तरफ सुन्दर जंगल है। कैलादेवी करौली राजवंश की कुल देवी है। पहले यह बहुत ही छोटा सा मंदिर था। अब यह मंदिर बहुत सुंदर बन गया है। ब्रज के लोक जीवन में कैला देवी की मान्यता दिन–प्रति दिन बढ़ती ही जा रही है। लोग मनौती माँगते हैं, दण्डोती परिक्रमा देते हैं। विशाल जन समूह नवरात्रि में यहाँ आता है। ब्रज लोक जीवन में बहुत सारी देवी मूर्तियों की पूजा की जाती है। चामुण्डा, चर्चिका, महाविद्या आदि छत्ता बाजार में मंगनी माता का छोटा सा मंदिर है, मंगनी माता का फूल डोल भी सजाया जाता है। होडल में सती मैया का मैला लगता है। इस दिन सभी स्त्रियाँ जल चढ़ाने जाती है। वर्तमान समय में भी इतना अपार जन समूह उमड़ता है, इसलिए होडल के स्कूल कॉलेज सभी बंद कर दिये जाते है।

ब्रजवासियों ने सदैव से ही प्रकृति की उपासना की है। वे सूर्य–चांद, तारे, नदी, ताल–तलैयाँ, कुँआ, वृक्ष और पर्वत सभी को पूजनीय मानते हैं। ब्रजवासी नीम, पीपल, वटवृक्ष, छौंकर, आँवला, तुलसा, कुश और दूब.....आदि की पूजा करते हैं। 'गो अष्टमी' को गाय की पूजा की जाती है। गाय की पूजा करना तो उनकी प्राचीन परम्परा है। ब्रज में गोवर्धन की पूजा की जाती है। दिपावली के दूसरे दिन व्रत रखते है। गोवर्धन घर में बना कर पूजा करते है। उसकी परिक्रमा देते हैं। मंदिरों में अन्नकूट का प्रसाद बँटता है। कार्तिक मास में गऊचरण अष्टमी (गोपाष्ट्मी) को गाय की पूजा करना प्राचीन पंरपरा है। इस दिन गाय की पूजा करके आटे की लोई बनाकर खिलाते भी हैं। ब्रज वनिताऐं इस दिन व्रत भी रखती हैं।

सन्दर्भ–सूत्र भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों से भिन्न अन्यतम संस्कृति है, और भारतीय संस्कृतियों में ब्रज

लोक–संस्कृति की अलग पहचान है इसीलिए ब्रज लोक संस्कृति संसार की श्रेष्ठत्म संस्कृति कहलाती है। वैदिक युग से वर्तमान युग तक ब्रज लोक संस्कृति ने मानव को शाश्वत जीवन मूल्य और अति उत्तम संस्कार दिये हैं। ब्रज क्षेत्र की सांस्कृतिक सीमा का निर्धारण करना असंभव है। श्री कृष्ण आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पहले के माने जाते हैं। इतने लम्बे समय के अंतराल में मथुरा मण्डल ने न जाने, कितने उतार–चढ़ाव देखे। इसलिए ब्रज प्रदेश की सीमा को निर्धारित करना असंभव है। ब्रज क्षेत्र का असाधारण महत्व लीला पुरूषोतम श्री कृष्ण की जन्म–भूमि और क्रीडा–स्थली के कारण है। ब्रज में जितने भी स्थान है वे प्रायः सभी श्री कृष्ण की लीला–स्थली हैं। ब्रज संस्कृति के लोक–जीवन के विकास का केन्द्र बिन्दु श्री कृष्ण है। उनके लोकरंजक रूप ने भारतीय जनता के मानस–पटल पर जो छाप छोड़ी है, वह आज भी अमिट है। इसीलिए ब्रजवासी जहाँ–जहाँ रहते हैं वहीं उनकी ब्रज संस्कृति है। इसके तत्पश्चात ब्रज क्षेत्र के सांस्कृतिक वैभव का चित्रण किया है, जिसमें ब्रज की यात्रा, ब्रज की पहाड़िया, प्राचीन मंदिर, ब्रज के वन, उपवन, ताल–तलैयाँ, प्रसिद्ध तीर्थ, ब्रज के लोकदेवता, ब्रज के लोकमेला, ब्रज के लोकपर्व, त्यौहार/लोकोत्सव, ब्रज का लोकजीवन, ब्रज लोकसंस्कृति, ब्रज लोकविश्वास और लोकप्रतीक.....आदि ब्रज क्षेत्र के सांस्कृतिक वैभवों का विस्तृत विवेचन दिया है।

किसी भी देश की लोक संस्कृति को समझना हो तो सर्वप्रथम उस प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्यों को समझना और जानना होगा क्योंकि लोक संस्कृति किसी भी देश, समाज और समुदाय की सम्पन्नता की सूचक होती है। ग्रामीण जीवन के रीति–रिवाज, रहन–सहन, आचार–विचार, धार्मिक आस्था, विश्वास, उत्सव, लोक पर्व, मेला, लोक कलाएँ, लोक गीत, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक गाथाओं और व्यापार सभी कुछ श्री सम्पदा की ओर आकर्षित करते है। लोक जीवन का पहनावा, उड़ावा, शोक–श्रृंगार, आहार–विहार, भजन–कीर्तन सभी लोक संस्कृति के सशक्त आधार है। लोककर्मः– जन्म से लेकर मरण तक के लोक संस्कार लोक जीवन के प्रत्येक क्षण में उपस्थित रहते है। यही लोक जीवन के विभिन्न तत्व हमारे ब्रज प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्य बन जाते हैं। विश्व में उत्तम संस्कृतियों में ब्रज प्रदेश की संस्कृति का नाम आता है। ब्रज संस्कृति से अभिप्रेत भारत वर्ष का ह्रदय है। भारत में ब्रज जनपद की संस्कृति महत्वपूर्ण तथा महिमामयी है। इसी कारण ब्रज का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना गया है। ब्रज लोक–जीवन के कण–कण में राधा–कृष्ण समाये हुए है। ब्रजवासी राधा–कृष्ण की उपासना के साथ–साथ लोक देवी–देवताओं को भी मानते हैं। वर्तमान समय में भी लोक देवी–देवताओं की पूजा की जाती है। ब्रज लोक जीवन में अनेक देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना होती है। लोक देवता जैसे– नागदेवता, कुआ वारो देवता, बूढ़ौ बाबू, जाहरपीर, सय्यैद, भैरों, लांगुरिया ..... आदि। लोकदेवी, मनसा–देवी, शीतलामाता, गणगौर, सांझी, चामुण्डा, चर्चिका, कात्यायनी, महाविद्या, कंकाली, नरी–सैंमरी, सती–मैया, सांचौली, करौली की केलादेवी, पथवारी .. .. आदि। इन देवी–देवताओं के अलावा ब्रजवासी सूर्य, चन्द्र, तारे, नदी, कुआ, ताल–तलैया, वृक्ष आदि की भी पूजा करते हैं।

गिरीश कुमार चतुर्वेदी के अनुसार ब्रज लोक संस्कृति में नाग–पंचमी का विशेष महत्व है। यह त्यौहार सावन मास की शुक्ल पंचमी को मनाया जाता है। ब्रज के प्राचीन लोक–देवताओं में यक्षों और नागों का प्रमुख स्थान रहा है। गाँव के बुजुर्ग लोग बताते है, कि मथुरा में एक प्रसिद्ध नागटीला था, जहाँ पर बहुत प्रकार सर्प रहते थे। परन्तु अब यहाँ पर आकाशवाणी केन्द्र बन चुका है। नाग पंचमी के दिन महिलाऐं घरों की दीवारों को लीप–पोतकर उस पर काले रंग से नाग की आकृति बनाकर दूध से पूजा करती हैं। कहीं–कहीं दूध में आटे की मोटी सेवईं भी डालकर राँधतीं हैं, फिर उन्हीं से पूजा करतीं हैं। नाग देवता की कहानी कहती हैं, जिसमें नागों की आलौकिक शक्ति का वर्णन किया जाता है। कहीं–कहीं नाग–स्थानों पर नाग–पूजा करके वॉबियों पर दूध चढ़ाती हैं, फूल–रोरी–चावल चढ़ाकर मनौती माँगती है। महिलायें समूह में नाग संबंधी लोक गीत भी गाती है। मथुरा में नाग–स्थान के रूप में 'सप्त समुद्री कूप' और 'नागटीला' प्रसिद्ध स्थान है।[5]

ब्रज में सावन मास के प्रत्येक सोमवार को शिव की पूजा प्रचलित लोक पूजा है। इस दिन शिव पर वेलपत्री धतूरा पुष्प और दूध चढ़ाते है। अधिकतर सभी महिलाऐं व्रत रखती हैं। हरिद्वार से कॉवर लाते है, कोई पैदल, कोई वाहन से, सोमवार के दिन बड़ी घूम–घाम से गा–बजाकर कॉवर शिव पर चढ़ाते है। सावन के प्रत्येक सोमवार को कॉवर चढ़ा सकते है। त्रयौदशी को कॉवर चढ़ाना अधिक शुभ माना जाता है। कॉवर चढ़ाते समय ब्रज वनिताएँ शिव के भजन गातीं हैं।

ब्रज में रास रचौ भारी।
स्याम के दरस कराय देयो प्यारी।।

हठ मत पकड़ो भोले भंडारी
वहाँ नहीं नर जाये, वहाँ जाए नारी
कैसे देखोगे रास स्याम कौ,
रास रचौ भारी
ब्रज में रास रचौ भारी।

देख री गौरा मौकूँ ऐसो बनाय ले,
मौकूँ कोई जान ना पावे
काजल बिंदी मेंहदी महावर
लंहगा पेहराय, घूम घूमारौ
ब्रज में रास रचौ भारी।

सिर पै ओढ़ी चुनरिया भोले ने
लंहगा पहनौ घूम–घूमरौ।
रास रचौ भारी
ब्रज में रास रचौ भारी
आगे–आगे गोरा पीछे–पीछे भंडारी
जान गये घट–घट के वासी
आ गये ब्रज में भोले–भंडारी
ब्रज में रास रचौ भारी।
रास रचौ भारी
ऐसी वंशी स्याम ने बजाई
मस्त है गये भोले–भंडारी
नाचत–नाचत भोले–भंडारी
सर से उड़ गई चुनरी सारी
रास रचौ भारी
ब्रज में रास रचौ भारी

''हर महीने की चर्तुदर्शी को शिवरात्रि मनाई जाती है, शिव पुराण के मुताबिक फागुन मास की कृष्ण पक्ष की चर्तुदर्शी को जो शिवरात्रि आती है उसे महाशिवरात्रि कहते हैं।''[6]

मथुरा निवासी कल्पना पाठक कहतीं हैं कि ''ब्रज में तीन बड़ी रात्रि मानी जाती हैं। 1 काल रात्रि, 2 महा रात्रि और 3 शिवरात्रि। ब्रज में तीनों रात्रियों को बड़ी घूमघाम से मनाया जाता है। काल रात्रि भादों मास की कृष्ण अष्ठमी को कृष्णाष्ठमी के रूप में मनाई जाती है। इस दिन ब्रज के नायक श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। महारात्रि कार्तिक मास की अमावस्या को दीवापली के त्यौहार के रूप में सभी मनाते हैं। इस दिन भगवान राम चौदह वर्ष वन में रहकर घर वापिस आये थे। शिवरात्रि फागुन मास की कृष्ण–त्रयौदशी के दिन शिवरात्रि के रूप में

मनाई जाती है। इस दिन शिव–पार्वती का विवाह हुआ था। शिव का व्याउला गाया जाता है।''[7]

शिवरात्रि के दिन नव विवाहिता कोरे मिट्टी के कलशों में जल भरकर सिर पर रखकर समूह के साथ गाती बजाती हुई जाती है। शिव पर जल चढ़ाती है। बेर, धतूरा, फल–फूल भी अर्पण करती है। शिव–पार्वती के विवाह के गीत गाये जाते हैं। जोगी लोग सारंगी और डमरू बजाकर 'शिव का व्याहलौ' गाते हैं। अमावस्या से एक दिन पहले 'बम–भौला' के पूजन में शिव के खप्पर की पूजा की जाती है। जोगियों को भोजन कराया जाता है। भोजन में कढ़ी–चावल, रोटी–भात बनाया जाता है। ब्रज में शिवरात्रि/शिवतेरस और शिव चौदस बड़े उल्लास के साथ मनाते हैं।

ब्रज लोक जीवन में हनुमान जी की भी उपासना की जाती है। हनुमान पर चौला चढ़ाते है और चूरमा का भोग लगाते हैं। हर मंगलवार की शाम को भोग लगाकर प्रसाद भी बाँटते हैं।

हनुमान जयन्ती के दिन हनुमान जी पर चौला चढ़ाकर पूजा अर्चना करके चूरमा और बाटी का प्रसाद भी बाँटा जाता है। (भंडारा भी होता है) और हनुमान के भजन गाए जाते हैं। उदाहरण–

वो तो लाल लंगाटे वाला है
वो तो अंजली का लाला है

मंगल भवन अमंगल हारी
द्रवहु सु दसरथ अजर विहारी
वो तो मंगल करने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

रघुकुल रीति सदा चली आई
प्राण जाई पर बचन न जाई
वो तो बचन निभाने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

संकट से हनुमान छुड़ावे
मन–कर्म–बचन ध्यान जौ लावे
वो तो संकट हरने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

भूत पिशाच निकट नहीं आवे
महावीर जब नाम सुनावे
वो तो भूत भगाने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

विद्यावान गुणी अति चातुर
राम काज करवे को आतुर
वो तो कारज संवारने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

सब सुख लेई तुम्हरी सरना
तुम रक्षक काहू कौ डरना
वो तो डर को भगाने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

गहरी नदिया नाव पुरानी
पार करो मेरे अन्तर्यामी
वो तो पार लगाने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

संकट कटे मिटै सब पीरा
जो सुमरै हनुमत बलवीरा
वो तो संकट काटने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

दीन दयाल विरद संभारी
हरहु नाथ अब संकट भारी
वो तो विपदा मिटाने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

नासै रोग हरै सब पीरा
जपत निरन्तर हनुमंत बीरा
वो तो रोग भगाने वाला है।
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

जै जै जै हनुमान गोसाई
कृपा करौ गुरूदेव की नाई
वो तो कृपा करने वाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....
संतन के तुम काज संवारौ
विपदा हरौ हनुमान पधारौ
वो तो सत्य का रखवाला है
वो तो अंजली का लाला है
वो .....

ब्रजवासी कुछ अन्य लोक देवताओं की भी पूजा करते हैं जैसे– कुँआ वारौ देवता, बूढ़ौ बाबू, जहारपीर, सय्यैद, भैरो, लागुँरा..... आदि।

''कुल देवता या कुल देवी पुरे कुल के देवता होते हैं, ना कि व्यक्तिगत देवता (इष्ट देवता) या ग्राम देवता।''[8]

गाँव में प्रायः पत्थर की गोल (सुंदर सी बटिया) पर या पत्थर पर सिंदूर, तेल का चोला चढ़ाकर पीपल की जड़ में रखकर लोक देवता या ग्राम देवता की पूजा भी करते हैं। अधिकतर लोक देवता दो ईंट लंबी–तिरछी खड़ी करके तिखुण्ठी झोपड़ी नुमा बनाकर उसकी पूजा करते हैं। इन लोक देवता को ग्रामवासी अपने खेत या घैर/(अपनी ही जगह में) रखते हैं। लोग एक साल बाद दीपावली पर अपने लोक देवताओं/(कुलदेवताओं) को निहलाकर दीयाबाती करते हैं और भोग लगाते हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि पूरे साल कोई भी इन ईंटों को न तो छूता है न तो तौड़ता है और ना फैंकता है, लोक मानस को यह डर रहता है कि किसी के कुल देवताओं को तोड़–फोड़ दिया, तो वह विचर जाएगें, और हमारा सबकुछ विनाश कर देगें। आजकल लोग गाँव छोड़कर शहर आ गए हैं लेकिन दीपावली पर अपने कुल देवता को निहलाने और भोग लगाने अवश्य जाते हैं। लड़कियाँ कुल देवताओं की पूजा नहीं करतीं। कुल देवता की

पूजा कुल बेटा–कुल वधू ही करते हैं।
बलदाऊ जी किसानों के अति प्रिय देवता हैं। उन्हें हलधर कहते हैं। किसान अपनी फसल काटकर कृष्ण के बड़े भाई हलधर बलदाऊ पर चढ़ाते है। दाऊजी के मंदिर पर मेला लगता है। दूर–दूर से स्त्री–पुरूष इस मंदिर पर मनौती मागने आते हैं।
सांझी ब्रज की एक लोक–देवी है। ऐसा माना जाता है गौरा–पार्वती का ही एक लोक प्रचलित रूप सांझी है। क्वारमास की शुक्ल प्रतिपदा से आठ दिन तक यह उत्सव मनाया जाता है। सांझी ब्रज की एक लोक–देवी है। सांझी की पूजा संध्या समय की जाती है। सांझी गौरी–पार्वती का एक लोक–प्रचलित रूप है। सांझी का लोकोत्सव ब्रज बालिकाओं का प्रमुख खेल है। ब्रज बालिकायें घर की दीवारों पर गोबर, फूल, चमकीली पत्तियों से सांझी बनाती है। नौ दिनों तक नित नये रूप में सांझी को परिवर्तित करके सजातीं हैं। रोज शाम को आरती करती हैं। प्रसाद बाँटते हैं। लड़कियाँ सामूहिक रूप से गीत गाती है। ब्रज के गाँवों में कहीं–कहीं घर की दीवारों पर छोटा मन्दिर बनाती हैं उन पर लोक–चित्रकारी करती हैं। मिट्टी की 'गौरा' बनाकर उसमें पधारती हैं संध्या समय पूजन करती हैं। सामूहिक रूप से भजन गाती है। इसे न्यौरता कहा जाता है।

गौरी री गौरी खोल किवरिया, बाहर ठाड़ी तेरी पूजनहारी।
गौरी पूजंतर बेटी, कहा फल मांगे।
मातु पिता कूं राज जु मांगे। भैयन की जौड़ी मांगे।
भाभी की गोद भतीजों मांगे।

ब्रज में चैत्र मास के प्रथम पखवाड़े में गणगौर की पूजा की जाती है। गणगौर का त्यौहार क्वारी कन्याओं का और नवविवाहिता के पूजन का त्यौहार है। क्वारी कन्याऐं अच्छे वर की कामना करती है। नवविवाहिता अखण्ड सौभाग्यवती होने की। इस दिन गौरी की पूजा अर्चना की जाती है। ब्रज में शीतलामाता की मान्यता भी बहुत है। चैत्र मास में होली जल जाने के बाद 'बासौड़ा' मनाया जाता है। इस दिन बासा खाना खाया जाता है। इस दिन शीतलामाता की पूजा की जाती है। आगरा में शीतला देवी का मेला आषाढ़ महीने के चारों सोमवार को लगता है। अधिकांश महिलाऐं आगरा जाकर शीतला के पुत्र 'कुआ वारौ देवता' और शीतला माता की भी पूजा करतीं हैं। इस पूजन के पीछे ब्रज में लोक विश्वास है कि शीतला माता चेचक के रोग से बचायेगी।
नवरात्रियों में ब्रजवासी नौ दिन दुर्गा पूजा करते हैं। हजारों की संख्या में लोक–गीत गाते हुए दुर्गा–दर्शन को जाते है। चैत्र शुक्ल पक्ष के आरम्भ होते ही नवरात्रि में सैकड़ों लोग स्त्री–पुरूष, बच्चे देवी जात को जाते हैं। सभी पीले रंग के कपड़े पहनते हैं। मोर पंखें को एक डन्डे में बाँधकर पुरूष लेकर चलते हैं। स्त्रियाँ बाल खुले रखती हैं। ब्रज में सेंमरी, संचौली, करौली की केलादेवी और नगर कोट की ज्वाला जी तथा चामुण्डा माता अति प्रसिद्ध है। श्रद्धालु भक्त दंडौती परिक्रमा भी करते हैं। दंडौती परिक्रमा (बैठकर और फिर लेटकर दी जाती है) जात से आने के बाद रात्रि जागरण करते हैं। देवी की भेंट और लागुरिया गाते हैं। ये सब लोक भजन होते है। आजकल फिल्मी तर्ज पर भी गीत गाने लगे है। लागुरिया देवी का लाड़ला बेटा माना गया है। ब्रज में लोक धुनों पर लांगुरिया गा–गाकर नाचने का प्रचलन भी है।
मथुरा जिले में छटीकरा स्टेशन के पास 'नरी सेंमरी' नाम का देवी का एक छोटा सा मंदिर है। नवरात्रि में यहाँ मेला लगता है। भक्त श्रृद्धालुओं का अपार जनसमूह दर्शन के लिए आता है। इस मंदिर में 'नरी–सेंमरी' नामक देवी की प्रतिमायें है। मथुरा जिले के कोसी परगना में सांचौली देवी का मंदिर है। ग्रामीण लोग यहाँ पूरे वर्ष दर्शन के लिए आते है। नवरात्रि में विशेष रूप से मेला लगता है। केला देवी का मंदिर राजस्थान के सवाई माधौपुर जिले के अंतर्गत करौली के पास में कालीसिल नाम की नदी बहती है। उसके पास मंदिर है। चारों तरफ सुन्दर जंगल है। कैलादेवी करौली राजवंश की कुल देवी है। पहले यह बहुत ही छोटा सा मंदिर था। अब यह मंदिर बहुत सुंदर बन गया है। ब्रज के लोक जीवन में कैला देवी की मान्यता दिन–प्रति दिन बढ़ती ही जा रही है। लोग मनौती माँगते हैं, दण्डोती परिक्रमा देते हैं। विशाल जन समूह नवरात्रि में यहाँ आता है। ब्रज लोक जीवन में बहुत सारी देवी मूर्तियों की पूजा की जाती है। चामुण्डा, चर्चिका, महाविद्या आदि छत्ता बाजार में मंगनी माता का छोटा सा मंदिर है, मंगनी माता का फूल डोल भी सजाया जाता है। होडल में सती मैया का मैला लगता है। इस दिन सभी स्त्रियाँ जल चढ़ाने जाती है। वर्तमान समय में भी इतना अपार जन समूह उमड़ता है, इसलिए होडल के स्कूल कॉलेज सभी बंद कर दिये जाते है।
ब्रजवासियों ने सदैव से ही प्रकृति की उपासना की है। वे सूर्य–चांद, तारे, नदी, ताल–तलैयाँ, कुँआ, वृक्ष और पर्वत सभी को पूजनीय मानते हैं। ब्रजवासी नीम, पीपल, वटवृक्ष, छौंकर, आँवला, तुलसा, कुश और दूब.....आदि की पूजा करते हैं। 'गो अष्टमी' को गाय की पूजा की जाती है। गाय की पूजा करना तो उनकी प्राचीन परम्परा है। ब्रज में गोवर्धन की पूजा की जाती है। दिपावली के दूसरे दिन व्रत रखते है। गोवर्धन घर में बना कर पूजा करते है। उसकी परिक्रमा देते हैं। मंदिरों में अन्नकूट का प्रसाद बँटता है। कार्तिक मास में गऊचरण अष्टमी (गोपाष्टमी) को गाय की पूजा करना प्राचीन परंपरा है। इस दिन गाय की पूजा करके आटे की लोई बनाकर खिलाते भी हैं। ब्रज वनिताऐं इस दिन व्रत भी रखती हैं।

सन्दर्भ सूची

1. गिरीश कुमार चतुर्वेदी, 'ब्रज की लोक संस्कृति', पृ० 48
https://m.punjabkesari.com/article/mahashivratri-2020-know-the-difference-between-shivaratri-and-mahashivratri/282026
2. मथुरा निवासी कल्पना पाठक, ब्रज में.....जाता है।
https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B5%E0%A4%A4%E0%A4%BE#:~:text=%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B5%E0%A4%A4%E0%A4%BE%20%E0%A4%AF%E0%A4%BE%20%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B5%E0%A5%80%20%E0%A4%AA%E0%A5%82%E0%A4%B0%E0%A5%87%20%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B2,%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B5%E0%A4%A4%E0%A4%BE%20%E0%A4%95%E0%A5%80%20%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%B9%20%E0%A4%AA%E0%A5%82%E0%A4%9C%E0%A4%A4%E0%A5%87%20%E0%A4%B9%E0%A5%88%E0%A4%82%E0%A5%A4
3. गिरीश कुमार चतुर्वेदी, 'ब्रज की लोक संस्कृति', पृ० 48
https://m.punjabkesari.com/article/mahashivratri-2020-know-the-difference-between-shivaratri-and-mahashivratri/282026
4. मथुरा निवासी कल्पना पाठक, ब्रज में.....जाता है।
https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B5%E0%A4%A4%E0%A4%BE#:~:text=%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B5%E0%A4%A4%E0%A4%BE%20%E0%A4%AF%E0%A4%BE%20%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A4%A6%E0%

A5%87%E0%A4%B5%E0%A5%80%20%E0%A4%A
A%E0%A5%82%E0%A4%B0%E0%A5%87%20%E0
%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B2,%E0%A4%95
%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A4%A6%E0%A5
%87%E0%A4%B5%E0%A4%A4%E0%A4%BE%20
%E0%A4%95%E0%A5%80%20%E0%A4%A4%E0%
A4%B0%E0%A4%B9%20%E0%A4%AA%E0%A5%
82%E0%A4%9C%E0%A4%A4%E0%A5%87%20%E
0%A4%B9%E0%A5%88%E0%A4%82%E0%A5%A4